साहित्योतिहास : स्वरूप एवं परिभाषा

- डॉ. इशरत खान

साहित्योतिहास लेखन अपने आप में एक महत्वपूर्ण विषय है। किसी भी भाषा के साहित्य के विकासक्रम, समृध्दि एवं प्रवृत्तियों का ज्ञान साहित्येतिहास के प्रकाश में सहज रुप से जा सकता है। साहित्येतिहास लेखन के लिए व्यापक दृष्टि व्यवस्थित अनुसंधान प्रवृत्ति, संतुलित एवं वैज्ञानिक लेखन- शक्ति निष्पक्ष निर्णय, युगीन परिस्थितियों का यथार्थ-बोध, जनता की चित्त प्रवृत्तियों के संचयन एवं सूक्ष्म अवलोकन की क्षमता सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं धार्मिक मूल्यों के विश्लेषण की परख आदि गुणों, का होना आवश्यक है। इनके अभाव में जो भी साहित्येतिहास लिखा जायेगा, वह वैज्ञानिक कसौटी पर खरा नहीं उतर सकता।

हिन्दी में सैंकडों की संख्या में साहित्येतिहास लिखे गये है और लिखने का क्रम जारी है, किन्तु वस्तुस्थिति कुछ ऐसी है कि हिन्दी का पाठक आज भी किसी एक साहित्येतिहास को पढकर संतुष्ट नहीं हो पाया है। "साहित्य का इतिहास" गुलाबराय के शब्दों में सनसंक्त साहित कवियों की नामावली नहीं है। कवि के मानस लोक का अध्यायन करने के लिए उसके युग की प्रवृत्तियों और परिस्थितियों का अध्ययन करना पडता है तभी हम जान सकते है कि कोई कवि कहाँ तक अपने समय की प्रवृत्तियों का प्रतिफलन मात्र है। और कहाँ तक उसने उन प्रवृत्तियों को आगे बढाया" वस्तुतः यह जीवनधारा जो व्याकुल प्रतिकूल अवस्था में बहती हुई हमारे अन्त में सतत प्रवाहित रहती है, उसको समझने के लिए हम साहित्य का इतिहास पढते हैं। यह हमारी उन मनोभावनाओं का इतिहास है, जो समय - सबय पर अपने परिवर्तित और नूतन परिवेश से साहित्य कला को संवारने में योग देती है। आरम्भ में किसी भी साहित्य की धारा का वेग बहुत क्षीण होता है। किन्तु समय के साथ-साथ उसमें व्यापकता और विस्तार की सम्भावनाएँ बनी रहती है।

साहित्य का इतिहास राजनीतिके इतिहास ते भिन्न प्रकार की वस्तु है। राजनीति के इतिहास में घटनाओं और उनके प्रवर्तक राजनीतिज्ञों का ऐतिहासिक विवरण मात्र होता है, पर साहित्य के इतिहास में साहित्यिक कृतियों एवं उनके सर्जको का ऐतिहासिक विवरण मात्र नहीं रहता। वह इसका भी संकेत करता है कि लेखकों - कवियों को साहित्यक व्यक्तिमत्व प्रदान करने में कौन-कौन सी परिस्थितियाँ काम करती रही है। कृतिकार सामाजिक प्रभावों को किस प्रकार आत्मसात करता है। उनसे उत्तेजित होता हुआ साहित्य के इतिहास के पन्ने बढाता है। साहित्येतिहास के युग परस्पर एक दूसरे को कैसे जन्म देते है। इन सभी विषयों के अध्ययन में साहित्य के इतिहास का विशेष योग होता है। सच यह है कि किसी देश या काल की उन समस्त लिखी बातों का समूह जो मार्मिक प्रभावों या रसात्मक व्यंजनाओं के लिए महत्वपूर्ण है, साहित्य का इतिहास कहलाता है। शाब्दिक दृष्टि से इतिहास का अर्थ है 'ऐसा ही था' या 'ऐसा ही हुआ'। इससे दो बातें स्पष्ट हैं एक तो इतिहास का सम्बन्ध अतीत से होता है, दूसरे यह कि उसके अन्तर्गत यथार्थ घटनाओं का समावेश किया जाता है। ये घटनाएँ प्रसिध्द न होते हुए भी यथार्थ होती है।

साहित्य के इतिहास के स्वरूप को समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि उसकी ऐतिहासिकता प्रमाणित है या नहीं। हिन्दी साहित्य में विशेष रूप से ऐतिहासिक संदिग्धता अत्यधिक विद्यमान है। इसका मूल कारण भारतीय कवियों की अन्तर्मुखी प्रवृत्ति है। वे अपने आप को विश्व के सामने यथार्थ रूप में प्रस्तुत नहीं करते अपितु अपने व्यक्तित्व और कृतित्व को छिपाने का प्रयास करते है। इससे हिन्दी साहित्य में तिथियों, ग्रंथों तथा कवियों की प्रमाणिकता में संदिग्धता के दर्शन होते हैं। इसके फलस्वरूप हिन्दी साहित्य के इतिहास का स्वरूप कहीं कहीं अत्यन्त ही दुर्बल हो गया है, और सत्य की कसौटी पर खरा नहीं उतरता। साहित्येतिहास लेखन में युग का सर्वाधिक महत्व है। समग्र और व्यापक

दृष्टि के अभाव में युग का अध्ययन सम्भव नहीं है। आचार्य शुक्ल से पूर्व हिन्दी में जो साहित्येतिहास लिखे गये प्रचुर सामग्री के प्रकाश में न आने के कारण उनमें अनगिनत त्रुटियां रही है और होनी भी चाहिए। किन्तु आचार्य शुक्ल ने जितने बडे कैनवस को लेकर इतिहास - लेखन की एक नवीन परम्परा को हिन्दी में प्रस्तुत किया. वह अपने आप में एक महत्वपूर्ण कार्य है। हिन्दी साहित्येतिहास लेखकों ने आधिकांशता, आचार्य शुक्ल की ही परम्परा का अनुसरण किया है। आचार्य शुक्ल में इतिहास– लेखन की अपूर्व क्षमता विद्यमान है। किन्तु उनके निश्चित पूर्वग्रहों के कारण अनेक स्थलों पर उनका इतिहास एकांगी होकर रह गया है। वैष्णव भक्ति-साहित्य से आचार्य शुक्ल की जो रागात्मका है वह सिध्द नाथ जैन सूफी तथा रीतियुगीन साहित्य से नहीं है। आचार्य शुक्ल के अवचेतन मस्तिष्क में वैष्णव धर्म के जो आदर्श अंकुर पल्लवित हुए हैं, उन्हीं आदर्शों और प्रतिमानों को कसौटी मानकर वे साहित्य का मूल्यांकन करने के पक्ष में प्रतीत होते हैं। नाथो जैनियों, और सिक्खों के साहित्यसे सम्बन्धित आचार्यशुक्ल की धारणाएँ बहुत समीचीन नहीं कही जा सकती। आचार्यशुक्ल ने भारतीय इतिहास को इतिहासकारों की दृष्टि से देखने के बजाय स्वयं अपनी दृष्टि से देखा और अपनी इच्छानुसार ही इतिहास की इमारत खडी की है। आचार्य शुक्ल के बाद आगे के इतिहास लेखकों ने सामान्यत: नई इमारत का निर्माण करने के स्थान पर इसी पुरानी इमारत को चमकाने का प्रयास किया है। डॉ. रामकुमार वर्मा, हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ. धीरेन्द्र वर्मा तथा ब्रजेश्वर वर्मा आदि विद्वानो में साहित्येतिहास लेखन की उल्लेख्य क्षमताएँ हैं और अपनी मौलिक उद्‌भावनाओं के साथ इन विद्वान लेखकों ने साहित्येतिहास को थोडा बहुत मोड देने का प्रयत्न भी किया है किन्तु जो लोक-प्रियता आचार्य शुक्ल के ग्रंथ को प्राप्त हुई, वह किसी अन्य ग्रन्थ को प्राप्त न हो सकी, जबकि यह सहजरूप से देखा जा सकता है कि आज के पाठकों के लिए आचार्य शुक्ल का इतिहास ग्रन्थ अनेक दृष्टियों से बहुत पुराना पड गया है। हिन्दी के अनेक विद्वान आज गम्भीरता से महसुस कर रहे हैं कि हिन्दी में एक स्वस्थ और वैज्ञानिक साहित्येतिहास लिखा जाना चाहिए। हिन्दी की 'सरस्वती संवाद' पत्रिका ने सन १९६१ ई.में इस दिशा में विशेष रूचि दिखाई थी और अपने वर्ष १० अंक ७ को "हिन्दी साहित्य का इतिहास विशेषांक" बनाकर प्रस्तुत किया था।

इतिहास लेखन के क्षेत्र में हिन्दी की चिन्तन दृष्टि उस कहानी का स्मरण दिलाती है, जो एक जर्मन कलाकार कलाकृति के प्रसंग में प्रसिध्द है। इस कलाकार ने अपनी– अपनी कलाकृति को एक चौराहे पर यह लिखकरत्संग दिया कि इसमें जहाँ– जहाँ त्रुटियाँ हो उन्हें चिहिनत कर दिया जाय। शाम को जब वह लौटा तो उसे सम्पूर्ण चित्र चिहिनत मिला। दूसरे दिन उसने उस कलाकृति को यह लिखकर चौराहे पर लगा दिया कि उसमें जो भी कमियां हों उन्हें ठीक कर दिया जाय। शाम को उसका चित्र ज्योंका त्यो मिला। हिन्दी के विद्वानों ने पत्रिकाओं में, विचार गोष्ठियों में और अन्य साहित्यिक मंचो से हिन्दी साहित्य के इतिहास के पुनर्लेखन की आवश्यकता का बारम्बार नारा लगाया है। उसके दोष और त्रुटियों के गिनाने में भी नहीं रहे है किन्तु इसके बावजूद कोई वैज्ञानिक इतिहास अभी तक प्रकाश में नहीं आ सका है। सम्पादित रूप में जो इतिहास ग्रन्थ देखने को मिलते हैं उनमें न तो शोध-परक दृष्टि पाई जाती है और न ही मौलिकता। पिटी पिटाई बातों को दोहराना और छात्रों के लिए साहित्येतिहास लिखकर उसके दो चार संस्करण बेच लेना ही साहित्येतिहास लेखन का उद्देश प्रतीत होने लगा है।

अत: आवश्यकता इस बात की है कि हमें पूर्व सामग्री और वर्तमान सामग्री के आधार पर एक सुन्दर हिन्दी साहित्येतिहास लिखना चाहिए जिससे हिन्दी साहित्य का विद्यार्थी लाभ उठा सके।

००

१. आधुनिक युग में हिन्दी साहित्य के वैज्ञानिक एवं प्रामाणिक इतिहास लिखे गये है। उनमें गणपतीचन्द्र गुप्त कृत हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास भाग १, २, बच्चन सिंह कृत हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास १९९६.
आदि इतिहास ग्रन्य उल्लेखनीय हैं।